विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग -दशम् , विषय- हिंदी

दिनांक 16 सितंबर 2020

NCERT syllabus

||अध्ययन -सामग्री||

सुप्रभात बच्चों,

आज की कक्षा में हम आपके लिए व्याकरण पाठ रस लेकर आए हैं ।

आज चर्चा होगी रस की परिभाषा रस का स्वरूप

|| रस ||

साहित्यिक आनंद को ‘रस’ कहते हैं ।

इस वाक्य में साहित्य शब्द का उल्लेख हुआ है ।

अब आपके मन में यह सवाल उठेगा कि साहित्य किसे कहते हैं ?

तो उत्तर होगा -किसी भी भाषा से संबंधित संजोयी गई रचना को ही 'साहित्य' कहते हैं ।

सरल शब्दों में कहें तो ,किसी भी भाषा की जमा पूंजी ही उसका साहित्य है ।

अब रस की ओर चलते हैं .....

यानी साहित्य को पढ़ने व सुनने मे जो आनंद आता है , हरि रस कहलाता है । इसी रस का स्वाद लेने के लिए पाठक, श्रोता या दर्शक साहित्य पढ़ते, सुनते या देखते हैं । यदि कविता या साहित्य में रस ना मिले तो उसका कोई मूल्य नहीं । इसलिए संस्कृत के आचार्य विश्वनाथ ने कहा है- 'वाक्यम् रसात्मक काव्यम्' अर्थात् सरस अभिव्यक्ति ही काव्य है ।

रस का स्वरूप –

साहित्य रस या काव्य रस लौकिक(सांसारिक रसों) से अलग है । लौकिक रस का अर्थ है- जीभ का स्वाद । लेकिन साहित्य का रस भीतरी और मानसिक होता है । इससे मानसिक रूप से महसूस किया जा सकता है

। इसका आनंद मन ही मन लिया जा सकता है ।

लेकिन यह अलौकिक भी नहीं है ।
अलौकिक रस तो भगवान के भजन, साधना और ध्यान में आता है ।
साहित्य रस ना तो पूर्णत: अलौकिक है और ना ही लौकिक है ।

रस का सूत्र-- नाट्यशास्त्र के आचार्य रस की परिभाषा देते हुए कहा – विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।
यह रस के अवयव कहलाते हैं ।   रस का आनंद तभी लिया जा सकता है जब पाठक श्रोता और दर्शक के हृदय स्थित स्थायी भाव

इस रस को ग्रहण करने के लिए पूरी तरह तत्पर हो ।

मनुष्य के हृदय में स्थायी रूप से या प्राकृतिक रूप से विद्यमान रहते हैं ।

स्थायी भाव कुल नौ प्रकार के होते हैं ।

निर्देश - शेष चर्चा हम कल करेंगे....

आज आप दी गई सामग्री कोई एकदम ध्यान से पढ़िएगा और उसे कॉपी में लिखिएगा ।